यीशु के साथ बाइबल की कहानियाँ



JESUS AND CHILDREN

अनुशंसा पत्र

हल्लेलूयाह!

नए नियम की कहानियों की यह पुस्तक हमें देने के लिए प्रभु का धन्यवाद!

मिशन क्षेत्र में संडे स्कूल के लिए शिक्षण सामग्री की कमी हमें हमेशा महसूस होती है। फिर भी, हमें हर वर्ष समर बाइबल स्कूल के लिए शिक्षण पुस्तकें मिलती हैं, लेकिन उन सामग्रियों में बच्चों के लिए इतनी पर्याप्त कहानियाँ नहीं होतीं जिन्हें वे याद रख सकें और परमेश्वर के वचन के अनुसार जीवन जी सकें। संडे स्कूल के शिक्षकों को बाइबल के वचनों को बच्चों के लिए आसानी से समझ आने वाली कहानियों में बदलने में बहुत कठिनाई होती थी।

फिर श्रीमती किम की "स्वर्ग की कहानियाँ" नामक पुस्तक हमें एक आशीष के उपहार के रूप में मिली। उसमें स्वर्ग की सच्ची गवाहियाँ भरी हुई थीं और उसे पढ़ना बहुत आनंददायक था। शिक्षक इस बात के लिए आभारी थे कि बच्चे आराधना में आसानी से ध्यान लगाने लगे और अब वे परमेश्वर के राज्य में जाने का सपना देखते हैं। इसी बीच, हमें नए नियम की कहानियों की पुस्तक के प्रकाशित होने का आनंददायक समाचार मिला। मेरी सच्ची इच्छा है कि यह नई पुस्तक और भी अधिक स्थानों और बच्चों तक पहुँचे, ताकि और भी अधिक बच्चों की आत्माएँ प्रभु की ओर मार्गदर्शित हों और परमेश्वर के राज्य का विस्तार भी हो।

– यंगही हान, फिलीपींस के लेगाज़पी में मिशनरी –

बाइबल की कहानियाँ शुरू होती हैं

प्रकाशन की तारीख	22 दिसंबर 2018
प्रकाशक	डोंगजे ली
लेखक	यूनोक जो / सूनही किम
संपादक	यूनोक जो
चित्रांकन	लिवेगा ली / येना जियोन
आराधना नृत्य	जीन कांग
गीत	दयौंग हान
मास्क निर्माण	जोंगोक गो / जुनिन ली / यूनयौंग ना
खेल	यूनसुक जंग
अंग्रेज़ी अनुवाद	हेनी ली
चीनी अनुवाद	गउल लिम



विषय-सूची

1. यीशु का जन्म

2. तारे का पीछा करते हुए

3. यीशु का बपतिस्मा

4. यीशु की परीक्षा ली गई

5. पतरस, लोगों को जीतने वाला मछुआरा

6. पहला चमत्कार

7. यीशु, आँधी आ गई है। मैं डर गया हूँ।

8. पिता! मैं घर वापस जाना चाहता हूँ।

9. जक्कई, मेरे पास नीचे आ जाओ।

10. बच्चों को मेरे पास आने दो।

11. मरा हुआ लाज़र जीवित हो गया।

12. छोटी बच्ची, उठो!



1. यीशु का जन्म

(मत्ती 1:18–25, लूका 2:1–7)

गलील के एक नगर में मरियम नाम की एक युवती रहती थी। उसकी सगाई यूसुफ नाम के एक विश्वासयोग्य व्यक्ति से हुई थी। वे दोनों परमेश्वर से प्रेम करते थे और सच्चे विश्वासी थे।

एक दिन परमेश्वर ने स्वर्गदूत गब्रिएल को मरियम के पास भेजा। गब्रिएल को देखकर मरियम डर गई।

"मरियम, डरो मत। मैं तुम्हारे पास परमेश्वर का संदेश लेकर आया हूँ।"

"स्वर्गदूत गब्रिएल, आप मेरे पास क्यों आए हैं?"

"मरियम, यद्यपि अभी तुम्हारा विवाह नहीं हुआ है, फिर भी पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारे एक बच्चा होगा।"

"क्या? यह मेरे साथ कैसे हो सकता है?"

"परमेश्वर ने तुम पर अपनी कृपा की है। जब तुम उस बच्चे को जन्म दोगी, तो उसका नाम यीशु रखना।"

मरियम यह सुनकर बहुत हैरान हुई और दौड़कर यूसुफ के पास गई।

"यूसुफ! यूसुफ!!"

"मरियम! धीरे दौड़ो, कहीं गिर न जाना।"

"यूसुफ, उफ मेरी साँस फूल गई है३ हाँफ रही हूँ३ मैं क्या करूँ? एक स्वर्गदूत मेरे पास आया और उसने कहा कि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से मेरे एक बच्चा होगा।"

"सच में? मरियम, यह तो३ वाह! अब हम क्या करेंगे? हमारे साथ यह कैसे हो सकता है? मैं बहुत डरा और घबराया हुआ हूँ!"

मरियम की बात सुनकर यूसुफ बहुत गहरी सोच में पड़ गया।



वह जानता था कि विवाह से पहले मरियम के गर्भवती होने के कारण लोग उसके बारे में तरह–तरह की बातें करेंगे और उसकी बदनामी होगी।

यूसुफ सोचने लगा कि चुपचाप अपनी सगाई तोड़ दे, ताकि मरियम की बदनामी न हो।

तभी परमेश्वर का एक स्वर्गदूत सपने में उसके पास आया।

"यूसुफ! दाऊद के पुत्र, मेरी बात ध्यान से सुनो।"

"ओह जी! मैं आपकी बात सुनने के लिए तैयार हूँ, स्वर्गदूत।"

"मरियम को अपनी पत्नी बनाने से मत डरो। उसके गर्भ में जो बच्चा है, वह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से है। वह एक पुत्र को जन्म देगी और तुम उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा।"

"जी हाँ, स्वर्गदूत!"

"यह सब इसलिए हुआ ताकि उस भविष्यवक्ता के द्वारा प्रभु ने जो कहा था, उसका पूरा अर्थ स्पष्ट हो जाएरू 'देखो! एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा।'"

यूसुफ नींद से जागा तो वह बहुत आश्चर्यचकित था। उसने स्वर्गदूत की आज्ञा मानी और मरियम को अपने घर ले आया और उसे अपनी पत्नी बना लिया। अब वह यीशु के आने की तैयारी करने लगा।

"धन्यवाद, प्रभु! मैं आपके वचन का पालन करूँगा।"

विवाह के बाद यूसुफ पहले से भी अधिक प्रेम और देखभाल के साथ मरियम की सेवा करने लगा।

उन दिनों सरकार ने जनगणना कराने का आदेश दिया था। यूसुफ दाऊद के परिवार से था, इसलिए उसे अपने पैतृक नगर बैतलहम जाना पड़ा। मरियम गर्भवती थी, इसलिए यूसुफ उसे भी अपने साथ लेकर यात्रा पर निकल पड़ा।

जब वे बैतलहम पहुँचे, तब मरियम के प्रसव का समय करीब आ गया था।



"मरियम, क्या तुम अभी ठीक हो? एक मिनट मेरा इंतजार करो। मैं तुम्हारे आराम करने के लिए कोई जगह ढूँढ़ता हूँ।"

कुछ समय बाद यूसुफ उदास होकर वापस आया।

"मरियम, मुझे माफ करना। मुझे कोई कमरा नहीं मिला। सभी सराय भरी हुई हैं।"

"यूसुफ! चिंता मत करो। हमारा परमेश्वर सब कुछ संभाल रहा है। आह३ लगता है बच्चा आने वाला है। मुझे बहुत दर्द हो रहा है।"

"ओह, मरियम! देखो, वह पशुओं का अस्तबल खाली है। कम से कम तुम वहाँ लेट सकती हो!"

मरियम ने उसी अस्तबल में यीशु को जन्म दिया। उसने बच्चे को कपड़े में लपेटकर चरनी में लिटा दिया।

अंततः बालक यीशु इस संसार में आ गए।

"वह एक पुत्र को जन्म देगी और तुम उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा।"

(मत्ती 1:21)



मेरे प्यारे बेटे और बेटी,

मेरे प्यारो! क्या तुम्हें यह जानने की जिज्ञासा नहीं है कि मैं, संसार के सृष्टिकर्ता का पुत्र होकर भी, उस अस्तबल में क्यों पैदा हुआ जहाँ जानवर रहते थे? अगर मैं किसी महल या किसी अमीर व्यक्ति के घर पैदा होता तो कैसा होता? मैं अस्तबल में इसलिए पैदा हुआ ताकि तुम्हारे पापों को अपने ऊपर लेकर तुम्हें परमेश्वर की संतान बना सकूँ। इन पापों को कोई और नहीं उठा सकता था, केवल मैं ही उन्हें उठा सकता था।

इसीलिए मैं संसार के सभी लोगों को बचाने के लिए उस ठंडे अस्तबल में सबसे साधारण और दीन रूप में पैदा हुआ। इसलिए मेरी इच्छा है कि मेरे बच्चे सबसे नम्र हृदय से मेरे इस वचन का पालन करेंकृ"अपने पड़ोसी से प्रेम करो।"

मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।

बहुत सारा प्रेम,

यीशु

प्रिय यीशु,

मेरे प्यारे यीशु, आपको जन्मदिन की बहुत–बहुत शुभकामनाएँ!

हैप्पी बर्थडे टू यू, हैप्पी बर्थडे टू यू!

आज आपका जन्मदिन है। आज क्रिसमस है।

हमने आपके जन्मदिन के उत्सव के लिए सबसे अच्छे कपड़े पहने और ऊँचे स्वर में आपके नाम की स्तुति की। हमने आपके जन्मदिन के बारे में एक नाटक भी तैयार किया है।

बहुत मजा आ रहा है। आपका जन्मदिन मनाने और इसकी तैयारी करने में हमें बिल्कुल भी थकान नहीं हो रही है।

एक बार फिर, जन्मदिन की बहुत–बहुत शुभकामनाएँ, यीशु!

मैं आपसे चाँद तक और फिर वापस आने जितना बहुत–बहुत प्रेम करता हूँ!

प्रेम सहित,



2. तारे का पीछा करते हुए

(मत्ती 2:1–12)

यीशु का जन्म राजा हेरोदेस के समय यहूदिया के बैतलहम में हुआ। पूर्व दिशा से तारों का अध्ययन करने वाले कुछ बुद्धिमान लोग यीशु को देखने के लिए यरूशलेम आए।

"वह कहाँ है जो यहूदियों का राजा बनकर पैदा हुआ है? वह कहाँ है?"

"हम पूर्व दिशा से आए बुद्धिमान लोग हैं। हम उसकी आराधना करने आए हैं।"

लोग उन बुद्धिमान लोगों की बातें समझ नहीं पा रहे थे।

"क्या तुमने सुना है कि यरूशलेम में यहूदियों का राजा पैदा हुआ है?"

जैसे–जैसे यरूशलेम में हर कोई उस राजा के जन्म के बारे में बात करने लगा, यह बात राजा हेरोदेस तक भी पहुँच गई। उसने सभी महत्वपूर्ण लोगों और धार्मिक अगुओं को एक सभा में बुलाया ताकि इस विषय पर चर्चा की जा सके।

"मसीह का जन्म कहाँ होना है?"

"निश्चित रूप से बैतलहम में। एक भविष्यवक्ता ने इसके बारे में पहले ही कहा हैरू 'यहूदियों की भूमि बैतलहम से एक शासक जन्म लेगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल का चरवाहा होगा।'"

जब राजा हेरोदेस ने सुना कि यहूदियों का राजा जन्म ले चुका है, तो वह अपना सिंहासन खोने के डर से बहुत घबरा गया।

उसने उन बुद्धिमान लोगों को चुपके से बुलाया ताकि उनसे और जानकारी ले सके।

"वह तारा कब दिखाई दिया था?"



"जब हमने वह तारा देखा, तभी हमने अपनी यात्रा शुरू की थी। हम अभी–अभी पूर्व दिशा से यहाँ पहुँचे हैं।"

"अच्छा? तो वह बच्चा कहाँ है?"

"वह बैतलहम में है।"

"तो अब तुम बैतलहम जाओ और उस बच्चे के बारे में अच्छी तरह पता करो। मैं भी उसके जन्म का उत्सव मनाना चाहता हूँ। इसलिए जैसे ही तुम उसे ढूँढ़ लो, वापस आकर मुझे बताना।"

बुद्धिमान लोग बैतलहम के लिए निकल पड़े। उन्हें पता नहीं था कि राजा हेरोदेस उनसे झूठ बोल रहा था।

तभी वही तारा, जिसे उन्होंने पूर्व दिशा में देखा था, फिर से उन्हें दिखाई दिया।

"वाह! उस तारे को देखो। यही वह तारा है जिसे हमने पहले देखा था और जिसका पीछा करते हुए यहाँ आए थे। यह हमें रास्ता दिखा रहा है!"

"सही कहा! यही वही तारा है। अब हमें बस इसके पीछे चलते रहना है।"

"दोस्तों! वह तारा रुक गया है। मुझे विश्वास है कि हम नवजात राजा के पास पहुँच गए हैं।"

"वाह! यही वह जगह है। यही वह स्थान है जहाँ इस्राएल का मसीह ठहरा हुआ है।"



वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ तारा ऊपर आकर रुक गया था। वहाँ उन्हें बालक यीशु दिखाई दिए।

मरियम और यूसुफ उन अजनबी मेहमानों को देखकर हैरान हो गए।

"आप लोग यहाँ तक कैसे पहुँचे?"

"एक चमकता हुआ तारा यहूदियों के राजा के जन्म का संकेत दे रहा था और उसी तारे ने हमें यहाँ तक पहुँचने का रास्ता दिखाया। हम बस उस तारे का पीछा करते हुए बैतलहम तक पहुँच गए।"

उन बुद्धिमान लोगों ने बालक यीशु के सामने झुककर उनकी आराधना की।

"जन्मदिन मुबारक हो, बालक यीशु!"

फिर उन्होंने अपने उपहारों के डिब्बे खोले।

"ये सोना, लोबान और गन्धरस हैं। ये हमारे उपहार हैं आपके लिए। कृपया इन्हें स्वीकार करें।"

बालक यीशु से मिलने के बाद परमेश्वर ने उन बुद्धिमान लोगों से बात की।

"हेरोदेस के पास वापस मत जाना। दूसरे रास्ते से अपने देश लौट जाना। वह बालक यीशु को मारने के लिए कुछ बुरा करने की योजना बना रहा है।"

इसलिए बुद्धिमान लोग परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार दूसरे रास्ते से अपने देश लौट गए।

"परन्तु हे बैतलहम, यहूदा की भूमि में स्थित, तू यहूदा के शासकों में किसी भी तरह सबसे छोटा नहीं हैय क्योंकि तुझ में से एक शासक आएगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल की चरवाही करेगा।"

(मत्ती 2:6)



मेरे प्यारे बेटे और बेटी,

बुद्धिमान लोग मेरा मार्ग खोजने के लिए उस तारे के पीछे चले थे, लेकिन आज परमेश्वर तुम्हें सुसमाचार के द्वारा मुझसे, परमेश्वर के पुत्र से, मिलाता है।

यदि कोई मित्र तुम्हें मेरे बारे में बताकर मेरे पास लाया है, तो वह मित्र तुम्हारे लिए उन बुद्धिमान लोगों में से एक बन गया है।

क्या तुम भी अपने परिवार और उन दोस्तों के लिए एक बुद्धिमान व्यक्ति नहीं बनना चाहते, जो अभी तक मुझे नहीं जानते?

आओ, हम उन्हें सुसमाचार सुनाएँ, जो इस संसार का सबसे अनमोल उपहार है। उन बुद्धिमान लोगों ने जिस प्रेम और आनंद के साथ यीशु के लिए उपहार लाए थे, उसी प्रेम और हृदय से हम भी दूसरों तक सुसमाचार पहुँचाएँ।

हमारा परमेश्वर हमसे बहुत प्रसन्न होगा। तुमसे बहुत प्रेम है!

बहुत सारा प्रेम,

यीशु

प्रिय यीशु,

मैं वैसा ही बुद्धिमान व्यक्ति बनना चाहता हूँ, जैसा आपने कहा है।

तो क्या मैं चौथा बुद्धिमान व्यक्ति बन सकता हूँ? सबसे पहले, मैं उन लोगों के नाम लिखूँगा जिन्हें मैं यह सुसमाचार सुनाना चाहता हूँ। फिर मैं उनके लिए प्रार्थना करूँगा और उन्हें आपके बारे में बताऊँगा, यीशु।

मैं उनके लिए चौथा बुद्धिमान व्यक्ति बनना चाहता हूँ।

तो चलो, तारे का पीछा करते हुए आगे बढ़ें!

मैं आपसे प्रेम करता हूँ, यीशु!

प्रेम सहित,



3. यीशु का बपतिस्मा

(मत्ती 3:1–17, मरकुस 1:1–11, लूका 3:1–22, यूहन्ना 1:19–28)

यहूदिया के जंगल में एक अजीब–सा व्यक्ति रहता था।

उसके कपड़े ऊँट के बालों से बने थे और उसकी कमर में चमड़े की पेटी बँधी रहती थी।

वह खाने के लिए टिड्डियाँ और जंगली शहद खाता था।

उसके बारे में सब कुछ बहुत अजीब लगता था, लेकिन किसी ने भी उसकी ओर उंगली नहीं उठाई।

बल्कि लोग उसके पास आते, अपने पापों को स्वीकार करते और उससे बपतिस्मा लेते थे।

उसका नाम यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था।

वह यहूदिया के जंगल में घूम–घूमकर यह संदेश सुनाता था,

"मन फिराओ! क्योंकि परमेश्वर का राज्य अब बहुत निकट है!"

लोग यरूशलेम, पूरे यहूदिया और यरदन नदी के आसपास के सभी क्षेत्रों से यूहन्ना के पास आते और यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लेते थे।

बपतिस्मा लेने से पहले लोग उसके सामने झुककर अपने किए हुए बुरे कामों को स्वीकार करते थे।

यूहन्ना लोगों को अपने पाप स्वीकार करने और परमेश्वर से क्षमा पाने में सहायता करता था।



एक दिन यीशु गलील से यरदन नदी के पास यूहन्ना से बपतिस्मा लेने आए।

"यूहन्ना! आओ, मुझे बपतिस्मा दो।"

यूहन्ना यह सुनकर बहुत चकित हुआ और यीशु को रोकना चाहता था।

"यीशु! ऐसा कैसे हो सकता है? यह संभव नहीं है। मुझे तो आपसे बपतिस्मा लेना चाहिए। मैं तो आपके पैरों को छूने के योग्य भी नहीं हूँ। फिर मैं आपको बपतिस्मा कैसे दे सकता हूँ?"

यीशु ने यूहन्ना की ओर देखकर कहा,

"यूहन्ना! अभी वैसा ही करो जैसा मैंने कहा है। यह उस योजना को पूरा करने के लिए है, जिसे परमेश्वर ने ठहराया है। चिंता मत करो, आओ और मुझे बपतिस्मा दो।"

"ठीक है, यीशु। जैसा आपने कहा है, मैं वैसा ही करूँगा।"

यूहन्ना इस बात से बहुत आभारी और खुश था कि उसे यीशु को बपतिस्मा देने का अवसर मिला।

उसने खुशी से यीशु को बपतिस्मा दिया।

जब यीशु बपतिस्मा लेने के बाद पानी से बाहर आए, तो यरदन नदी के आसपास खड़े लोग एक अद्भुत दृश्य देखकर हैरान रह गए।

"देखो! आकाश खुल गया है! पवित्र आत्मा कबूतर के समान उतरकर यीशु पर आ गया और उन पर ठहर गया।"



लेकिन यह अकेली अद्‌भुत बात नहीं थी। स्वर्ग से एक आवाज भी सुनाई दी।

"यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

यीशु को बपतिस्मा देने के बाद यूहन्ना लोगों से कह रहा था,

"मैं तो पानी से बपतिस्मा देता हूँ। जैसा कि मैंने पहले कहा था, मेरे बाद एक ऐसा व्यक्ति आएगा जो लोगों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा। वही यीशु हैं। जब मैं उन्हें बपतिस्मा दे रहा था, तब पवित्र आत्मा कबूतर के समान उतरकर उन पर ठहर गया। वही परमेश्वर के पुत्र हैं।"

इस प्रकार यीशु ने बपतिस्मा लेकर लोगों के सामने यह स्पष्ट रूप से प्रकट किया कि वे परमेश्वर के पुत्र हैं।

"यीशु ने बपतिस्मा लिया और पानी से बाहर आए। उसी समय आकाश खुल गया और उन्होंने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर ठहरते देखा। और स्वर्ग से आवाज आई, 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ।'"

(मत्ती 3:16:17)



मेरे प्यारे बेटे और बेटी,

आज मैं तुम्हें एक ऐसी कहानी बताऊँगा जिसे समझना थोड़ा कठिन है, लेकिन इसे जानना तुम्हारे लिए बहुत जरूरी है। क्या तुमने पवित्र त्रिएकता के बारे में सुना है?

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। जब मैंने बपतिस्मा लिया और पानी से बाहर आया, तब परमेश्वर ने आवाज के रूप में स्वयं को प्रकट किया और पवित्र आत्मा कबूतर के समान उतरकर मुझ पर ठहरा।

यह वह क्षण था जब परमेश्वर पिता, मैं पुत्र और पवित्र आत्माकृतीनों एक साथ प्रकट हुए। यही पवित्र त्रिएकता है।

परमेश्वर ने जो आवाज दी,

"यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

यह संदेश तुम सभी मेरे बच्चों के लिए भी है। इसलिए यदि तुम मुझ पर विश्वास करते हो, जिसे परमेश्वर ने भेजा है, तो तुम भी परमेश्वर की संतान बन सकते हो।

तुमसे बहुत प्रेम है!

बहुत सारा प्रेम,

यीशु

प्रिय यीशु,

यीशु! वाह! यह समझना थोड़ा कठिन है। यह तो पहाड़े याद करने से भी ज्यादा मुश्किल है।

क्या बस इतना समझना है कि पवित्र त्रिएकता – परमेश्वर पिता, यीशु और पवित्रआत्मा – एक हैं?

यह समझना उतना कठिन नहीं है कि हमें अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए, ताकि हम आपकी संतान बन सकें, ठीक वैसे ही जैसे लोग यूहन्ना से बपतिस्मा लेने से पहले अपने पापों को स्वीकार करते थे।

आपके प्रेम के लिए धन्यवाद। आपने हमें अपने बच्चे बनने की कृपा दी, जब हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं।

मैं आपसे प्रेम करता हूँ, यीशु।
प्रेम सहित,



4. यीशु की परीक्षा ली गई

(मत्ती 4:1–11, मरकुस 1:12–13, लूका 4:1–13)

यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बपतिस्मा लेकर पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर यरदन नदी से लौटे। फिर पवित्र आत्मा उन्हें जंगल में ले गया, जहाँ उन्होंने 40 दिनों तक उपवास किया। वे दिन–रात प्रार्थना करते रहे।

एक दिन शैतान यीशु के पास आया।

"अरे यीशु! तुम्हें बहुत भूख लगी होगी। क्या तुम परमेश्वर के पुत्र हो?"

"हाँ, मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।"

"सच में? अगर तुम परमेश्वर के पुत्र हो, तो इन पत्थरों से कहो कि ये रोटियाँ बन जाएँ।"

यीशु ने उत्तर दिया,

"पवित्र शास्त्र में लिखा है, 'मनुष्य केवल रोटी से जीवित नहीं रहता, बल्कि परमेश्वर के मुँह से निकलने वाले हर वचन से जीवित रहता है।'"

शैतान के पास इसका कोई उत्तर नहीं था।

"हूँ३ यह तरीका भी काम नहीं आया। चालीस दिन से उपवास करने के कारण इसे बहुत भूख लगी होगी। फिर भी इसने मेरी बात क्यों नहीं मानी? हूँ३ अब मैं इसे परमेश्वर के वचन से ही परखूँगा। पहली परीक्षा में इसने परमेश्वर के वचन से मुझे जवाब दिया था। हा हा हा"



शैतान यीशु को पवित्र नगर में ले गया और उनकी परीक्षा लेने के लिए उन्हें एक बहुत ऊँची इमारत के शिखर पर खड़ा कर दिया।

"अगर तुम परमेश्वर के पुत्र हो, तो यहाँ से नीचे कूद जाओ! क्योंकि पवित्र शास्त्र में लिखा है, 'परमेश्वर अपने स्वर्गदूतों को तुम्हारे लिए आज्ञा देगा और वे तुम्हें अपने हाथों पर उठा लेंगे, ताकि तुम्हारा पैर पत्थर से न टकराए।' इसलिए नीचे कूद जाओ!"

यीशु ने उत्तर दिया,

"पवित्र शास्त्र में यह भी लिखा है, 'तू अपने प्रभु परमेश्वर की परीक्षा न लेना।'"

शैतान ने सोचा था कि यदि वह यीशु को परमेश्वर के वचन से परीक्षा में डालेगा, तो यीशु कुछ नहीं कर पाएँगे। लेकिन यीशु बिल्कुल भी परीक्षा में नहीं पड़े।

"आह३ यह तो बहुत कठिन है। अब मैं क्या करूँ? यह तो यहूदियों की भीड़ के सामने महान नायक बन सकता है। हाय३ यह तरीका भी काम नहीं आया। इसने परमेश्वर के वचन से ही मेरी परीक्षा का जवाब दे दिया। मुझे सोचना होगा! अच्छी तरह सोचना होगा! मुझे आखिरी परीक्षा में हर हाल में जीतना है।"

शैतान यीशु को हराने के लिए एक और कठिन और चालाक परीक्षा की तैयारी करने लगा।



शैतान यीशु को एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया, जो पिछली जगह से भी बहुत ऊँचा था।

"यीशु, इधर देखो! क्या तुम्हें यहाँ से संसार के सारे राज्य दिखाई दे रहे हैं? और उनकी सारी महिमा भी? मैं तुम्हें इन सबकी महिमा और शक्ति दे दूँगा।"

"तुम मुझे इन सभी राज्यों की शक्ति और महिमा कैसे दे सकते हो?"

"यह सब मुझे दिया गया है। यह मेरा है, इसलिए जिसे चाहूँ उसे दे सकता हूँ।"

शैतान ने आगे कहा,

"यीशु! यदि तुम मेरे सामने झुककर मेरी आराधना करो, तो मैं यह सब तुम्हें दे दूँगा।"

यीशु ने शैतान को आदेश दिया,

"दूर हो जा, शैतान! पवित्र शास्त्र में लिखा है, 'तू अपने प्रभु परमेश्वर को दण्डवत् करना और केवल उसी की सेवा करना।' अभी दूर हो जा!"

तब शैतान तुरंत वहाँ से चला गया।

फिर स्वर्गदूत यीशु के पास आए और उनकी सेवा करने लगे।

यीशु ने उसे उत्तर दिया, "यह भी लिखा है, 'तू अपने प्रभु परमेश्वर की परीक्षा न लेना।'"

(मत्ती 4:7)



मेरे प्यारे बेटे और बेटी,

शैतान ने सोचा था कि वह मुझे हरा देगा, लेकिन ऐसा कैसे हो सकता था?

वह डर गया और भाग गया। लेकिन कुछ समय बाद वह फिर आया और कई बार मुझे परखने और प्रलोभन में डालने की कोशिश की। तुम्हारे साथ भी ऐसा ही होगा, मेरे बच्चों। जैसे–जैसे तुम मुझ पर विश्वास करके मेरे करीब आते जाओगे, तुम्हें शैतान की ओर से और अधिक प्रलोभन और परीक्षाओं का सामना करना पड़ सकता है।

शैतान मेरे करीब रहने वाले लोगों को गिराने की कोशिश करता रहेगा, क्योंकि वह मुझसे बहुत डरता है।

यदि तुम परमेश्वर के वचनों के अनुसार जीवन जीते हो और हमेशा प्रार्थना करते हो, तो तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है।

तब तुम्हारे और शैतान के बीच एक ऐसी मजबूत दीवार होगी कि वह तुम्हें छू भी नहीं पाएगा, मेरे प्यारे।

मैं तुमसे प्रेम करता हूँ!

बहुत सारा प्रेम,

यीशु

प्रिय यीशु,

यीशु! कितना अच्छा होता अगर हम शैतान को देख पातेकृसींगों वाले किसी डरावने राक्षस की तरह। मुझे समझ नहीं आता कि मैं उससे कैसे लडूँ, क्योंकि हम उसे देख नहीं सकते।

कभी–कभी मुझे लगता है कि मैं उसके प्रलोभनों के वश में आ जाता हूँ। कभी मेरे परिवार के लोग या मेरे सबसे अच्छे दोस्त भी उसके प्रभाव में आ सकते हैं।

उफ! मुझे समझ नहीं आता कि मैं क्या करूँ। लेकिन मैं एक बात निश्चित रूप से जानता हूँ कि यदि मैं हमेशा आपकी आराधना करता रहूँ, आपसे प्रार्थना करता रहूँ और आपके वचनों को सुनता रहूँ, तो शैतान मेरे करीब नहीं आ सकता।

मैं हमेशा आपके साथ रहूँगा, यीशु।

मैं आपसे प्रेम करता हूँ!

प्रेम सहित,



5. पतरस, लोगों को जीतने वाला मछुआरा

(मत्ती 4:18–22, मरकुस 1:16–20, लूका 5:1–11)

एक दिन शमौन पतरस नाम का एक मछुआरा मछली पकड़ने के लिए गलील की झील पर गया।

"मछलियों३ मेरी जाल में आ जाओ! मैं चाहता हूँ कि मेरे जाल मछलियों से भर जाएँ!"

"मछलियाँ कहाँ हो? मेरी जाल में आ जाओ!"

"आह अब तो सूरज निकलने वाला है। मैंने अभी तक एक भी मछली नहीं पकड़ी। क्या मैं खाली टोकरी लेकर वापस जाऊँगा? फिर आज मैं क्या खाऊँगा? हूँ!"

पतरस पूरी रात जाल डालता रहा, लेकिन उसे एक भी मछली नहीं मिली। वह कुछ देर आराम करने के लिए किनारे पर वापस आ गया।

तभी यीशु पतरस के पास आए और उसकी नाव में चढ़ गए।

"नाव को किनारे से थोड़ा दूर ले चलो।"

यीशु नाव में बैठकर किनारे पर खड़े लोगों को शिक्षा देने लगे। फिर यीशु ने पतरस से कहा,

"नाव को झील के गहरे पानी में ले जाओ और मछलियाँ पकड़ने के लिए अपने जाल डालो।"



पतरस एक अनुभवी मछुआरा था और मछली पकड़ने की जगहों के बारे में बहुत अच्छी तरह जानता था। यीशु ने पतरस से कहा,

"झील के गहरे पानी में जाओ और अपने जाल डालो।"

"यीशु, मैंने पूरी रात जाल डाले हैं, फिर भी मुझे एक भी मछली नहीं मिली।"

"ठीक है, यीशु! जैसा आप कहते हैं, मैं वैसा ही करूँगा।"

यीशु के वचन के अनुसार पतरस झील के गहरे पानी में गया और अपने जाल डाल दिए। कुछ समय बाद पतरस ने जाल खींचना शुरू किया। जाल इतने अधिक मछलियों से भर गए थे कि वह उन्हें अकेले खींच ही नहीं पा रहा था।

"वाह! हे परमेश्वर! यह तो बहुत ज्यादा भर गया है! जाल तो फटने वाला है!"

पतरस ने झील के दूसरे किनारे पर मछली पकड़ रहे अपने दोस्तों से मदद माँगी।

"अरे दोस्तों! जल्दी आकर मेरी मदद करो! मेरे जाल मछलियों से इतने भर गए हैं कि वे फटने वाले हैं।"

"हाँ, बिल्कुल! लेकिन तुम्हें इतनी सारी मछलियाँ कैसे मिल गईं? हमने तो एक भी मछली नहीं पकड़ी।"

पतरस के दोस्त आए और जाल खींचने में उसकी मदद करने लगे। उन्होंने दोनों नावों को इतनी सारी मछलियों से भर दिया कि नावें लगभग डूबने लगीं।



"हा हा हा! यह तो बहुत ज्यादा मछलियाँ हैं! मुझे लगता है कि इतनी सारी मछलियों के कारण हमारी नाव पानी में डूब जाएगी!"

पतरस और उसके साथ काम करने वाले सभी लोग यह देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुए कि पतरस ने कितनी सारी मछलियाँ पकड़ी थीं। उसके साथी याकूब और यूहन्ना भी हैरान थे।

पतरस इस चमत्कार को देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुआ, लेकिन साथ ही डर भी गया।

पतरस यीशु के पास गया और घुटनों के बल झुक गया।

"यीशु, मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं पापी मनुष्य हूँ। कृपया मुझसे दूर चले जाइए।"

"पतरस, तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?"

"यीशु, मैं आपको नहीं जानता था। मैंने शुरुआत में आप पर विश्वास भी नहीं किया। इसलिए कृपया मुझे छोड़ दीजिए।"

तब यीशु ने पतरस से कहा,

"पतरस, डरो मतय अब से तुम लोगों को जीतने वाले मछुआरे बनोगे।"

पतरस और उसके साथी याकूब और यूहन्ना अपनी सारी चीजें किनारे पर छोड़कर यीशु के पीछे हो लिए।

"तब यीशु ने शमौन से कहा, 'डरो मतय अब से तुम मनुष्यों को पकड़ोगे।' तब वे नावों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए।"

(लूका 5:10:11)



मेरे प्यारे बेटे और बेटी,

पतरस को शायद मेरे यह कहने का कारण समझ नहीं आया होगा कि "गहरे पानी में जाकर अपने जाल डालो।" क्योंकि मछुआरों के लिए मछली पकड़ने का यह सामान्य तरीका नहीं था।

लेकिन पतरस ने मेरे वचन का पालन किया और इस चमत्कार का अनुभव किया। इसके बाद वह मेरा शिष्य बन गया। तुम्हें भी पतरस की तरह अपनी सोच और अपनी धारणाओं को एक तरफ रखकर मेरे वचनों को सुनना चाहिए। तब तुम भी मुझसे मिल सकते हो और मुझसे बातें कर सकते हो।

हम्म तुम मेरे द्वारा किए गए चमत्कारों को भी देखोगे।

तुमसे बहुत प्रेम है!

बहुत सारा प्रेम,

यीशु

प्रिय यीशु,

मेरे प्यारे यीशु! "आज्ञा मानना" क्या होता है?

मैंने अपनी माँ से पूछा, तो उन्होंने कहा कि इसका अर्थ है "सच्चाई से किसी की बात का पालन करना।"

आह! क्या इसका मतलब वही है जब मेरी माँ मुझे कुछ करने के लिए कहती हैं और मैं उनसे "हाँ!" कहता हूँ?

लेकिन मैं "हाँ!" कहने से ज्यादा "नहीं! मैं यह नहीं करना चाहता।" कहता हूँ। फिर भी जब मैं कहता हूँ, "हाँ! मैं करूँगा।", तो मुझे "नहीं!" कहने की तुलना में ज्यादा अच्छा महसूस होता है। क्या यही कारण है कि यीशु ने हमें आज्ञा मानने के लिए कहा है?

यीशु, मैं आपके वचनों का पालन करूँगा। मैं अपने पड़ोसियों से प्रेम करूँगा और अपने दोस्तों को आपकी महान कहानियाँ सुनाऊँगा।

मैं आपसे प्रेम करता हूँ, यीशु।

प्रेम सहित,



6. पहला चमत्कार

यूहन्ना 2:1-11

यीशु ने लोगों को बहुत से चमत्कार दिखाए थे। पानी को दाखरस में बदलना उनका पहला चमत्कार था।

यह तब हुआ जब यीशु और उनकी माँ एक विवाह में शामिल होने के लिए काना गए थे। उनके चेलों को भी आमंत्रित किया गया था। नवविवाहित जोड़े के विवाह का उत्सव मनाने के लिए बहुत से लोग समारोह में खा-पी रहे थे।

समारोह का प्रबंधक बाहर आया और लोगों से बोला,

“देवियो और सज्जनो, मुझे क्षमा करें। हमारा आखिरी दाखरस भी अभी समाप्त हो गया है।

इस समारोह के लिए हमारी तैयारी पर्याप्त नहीं थी। मुझे सच में बहुत खेद है।”

यीशु की माँ ने यह समाचार सुना और उन्होंने यीशु से कहा,

“मेरे बेटे, यीशु। उनका दाखरस खत्म हो रहा है।”

“हे नारी, आप मुझसे यह क्यों कह रही हैं? अभी मेरे काम को शुरू करने का समय नहीं आया है।”

लेकिन उनकी माँ ने सेवकों को इकट्ठा किया और कहा,

“यीशु तुमसे जो कुछ कहें, वही करना।”



यहूदियों में घर में प्रवेश करने से पहले अपने हाथ और पैर धोने की परंपरा थी, इसलिए अधिकतर घरों के प्रवेश द्वार पर पानी के बड़े-बड़े मटके रखे होते थे।

प्रवेश द्वार पर पानी के 6 बड़े मटके रखे थे।

“उन मटकों को लो और उनमें पानी भर दो।”

सेवक उलझन में पड़ गए।

“दोस्तों, इसका क्या मतलब है? उन्होंने तो हमें बहुत अजीब काम करने के लिए कहा है।”

“हाँ, यह सच में बहुत अजीब है। हमारा दाखरस अभी-अभी खत्म हुआ है, लेकिन उन्होंने हमें धोने के लिए रखे मटकों में पानी भरने को कहा है।”

“दोस्तों... लेकिन उनकी माँ ने हमसे कहा था कि यीशु जो कुछ कहें, हम वही करें।”

“सही कहा। क्या हमारे पास कोई और रास्ता है? चलो, जैसा उन्होंने कहा है वैसा ही करते हैं।”

जब उन्होंने मटकों को पानी से भर दिया, तो यीशु ने उनसे कहा,

“अब इसमें से थोड़ा पानी निकालो और इस समारोह के प्रबंधक के पास ले जाओ।”

उन्होंने ठीक वैसा ही किया जैसा यीशु ने कहा था।

वे मटके में से थोड़ा पानी निकालकर समारोह के प्रबंधक के पास ले गए।

प्रबंधक ने उसकी एक घूँट पी और दूल्हे को ढूँढ़ने लगा।



“वाह! आपने इतना अच्छा दाखरस अब तक कैसे बचाकर रखा? आमतौर पर लोग पहले अच्छा दाखरस परोसते हैं और जब लोग पीकर नशे में हो जाते हैं, तब सस्ता दाखरस परोसते हैं। आप सच में बहुत अच्छे व्यक्ति हैं!”

सेवक हैरान रह गए।

“क्या?? क्या यह संभव है? हम तो साफ-साफ पानी ही उनके पास लेकर गए थे।”

“मुझे इस पर विश्वास नहीं हो रहा! क्या उनके पास जाते समय रास्ते में ही पानी दाखरस में बदल गया?”

“वाह, हाँ! यह अच्छे दाखरस में बदल गया।”

“हमने यीशु की बात मानकर बहुत अच्छा निर्णय लिया।”

“मुझे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा कि यह मेरी आँखों के सामने हुआ। क्या यह सच में हुआ? हुआ ना?”

“हाँ, हाँ! लेकिन मैं अभी भी हैरान हूँ।”

यीशु ने विवाह समारोह में पानी को दाखरस में बदलकर लोगों के सामने अपना पहला चमत्कार किया। यीशु द्वारा दिए गए दाखरस का आनंद लेते हुए बहुत से लोगों ने बहुत अच्छा समय बिताया।

उनके चेलों ने भी यीशु द्वारा किए गए चमत्कार को देखा और उन्होंने उन पर विश्वास किया।



मेरे प्यारे बेटे और बेटी,

मेरे बच्चों, मैं चाहता हूँ कि तुम हमेशा खुश रहो, इसलिए मैंने बहुत से चमत्कार किए। पहला चमत्कार विवाह समारोह में हुआ। विवाह समारोह खुशियों और आनंद से भरा होना चाहिए, इसीलिए मैंने यह किया। मेरा पहला चमत्कार विवाह समारोह में इसलिए हुआ ताकि मैं तुम्हें दिखा सकूँ कि मैं चाहता हूँ कि तुम हमेशा खुश और आनंदित रहो, ठीक उन लोगों की तरह जिन्होंने मेरे दाखरस के साथ उस समारोह का आनंद लिया।

मैंने तुम्हें इससे भी बड़ा चमत्कार दिया है। वह केवल मुझ पर विश्वास करने के द्वारा मेरे बच्चे बनने का विशेष अधिकार है। इसलिए मैं सच में चाहता हूँ कि तुम हमेशा मेरे साथ रहो और इस शुभ समाचार को अपने दोस्तों और परिवार के साथ बाँटो।

मैं तुमसे प्रेम करता हूँ!

ढेर सारा प्यार,
यीशु

प्यारे यीशु,

यीशु! आपने हमें वह महान चमत्कार दिया जिसने हमें हमारे पाप से स्वतंत्र किया, जिसे इस संसार में कोई और नहीं कर सकता था, केवल आप ही कर सकते थे।

आपने क्रूस उठाकर हमारे पाप अपने ऊपर ले लिए, ताकि हमें आपके राज्य के लोग होने की खुशी मिल सके। केवल आप पर विश्वास करने के द्वारा आपने हमें आपके बच्चे बनने का विशेष अधिकार दिया।

धन्यवाद, यीशु! मैं आपसे प्रेम करता/करती हूँ।

प्यार सहित,
मैं



7. यीशु, आँधी आ गई है। मैं डर गया हूँ।

(मत्ती 8:23-27, मरकुस 4:35-41, लूका 8:22-25)

लोग यीशु को और करीब से देखना चाहते थे। इसलिए जब यीशु ने लोगों को शिक्षा देना समाप्त किया, तब भी बहुत से लोग उनके आसपास खड़े रहे।

यीशु अपने शिष्यों के साथ वहाँ से जाने के लिए नाव में सवार हुए।

"आओ, गलील की झील के उस पार चलें।"

शांत झील में नाव चल रही थी और सभी लोग आराम से बैठे थे।

बहुत बड़ी भीड़ को शिक्षा देते–देते यीशु थक गए थे। इसलिए वे नाव के पिछले हिस्से में एक तकिए पर सिर रखकर सो गए।

अचानक बहुत भयंकर आँधी आ गई। बड़ी–बड़ी लहरें नाव से टकराने लगीं और नाव बहुत तेजी से पानी से भरने लगी।

शिष्य घबराकर इधर–उधर भागने लगे और बहुत डर गए।

"नहीं! नाव में और पानी भरता जा रहा है।"

"यह नाव जल्द ही टूट जाएगी!"

"फिर हम पानी में डूबकर मर जाएँगे!"



"यीशु कहाँ हैं? हाँ! हम तो यीशु के साथ हैं।"

"यीशु! यीशु!"

किसी ने चिल्लाकर कहा,

"मैं बहुत डर गया हूँ। तुममें से कुछ लोग जाकर यीशु को ढूँढ़ो, तब तक हम नाव से पानी बाहर निकालते हैं।"

"ऐसा लगता है कि नाव अभी डूब जाएगी। जल्दी से उन्हें ढूँढ़ते हैं।"

शिष्य यीशु को ढूँढ़ने के लिए दौड़ पड़े।

यीशु नाव के पिछले हिस्से में गहरी नींद में सो रहे थे।

वे यीशु के पास दौड़कर पहुँचे।

"यीशु, यीशु! आप अभी तक कैसे सो रहे हैं?"

"हम अभी डूबने वाले हैं। कृपया हमें बचाइए।"

"हे प्रभु, कृपया हमें बचाइए।"

"यीशु, हमारी मदद कीजिए। हम मरने वाले हैं।"

शिष्य रोते हुए यीशु को जगाने लगे।

उनकी पुकार सुनकर यीशु जाग गए और उन्होंने हवा और लहरों को डाँटा।

"हे हवाओ, अभी रुक जाओ!"

"हे लहरों, शांत हो जाओ!"



तुरंत भयंकर आँधी रुक गई। बड़ी–बड़ी लहरें शांत हो गईं और नाव भी हिलना बंद हो गई।

फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा,

"तुम्हारा विश्वास कहाँ है? अरे अल्पविश्वासियों!"

यीशु की बात सुनकर भी शिष्य अभी भी डरे हुए थे। उन्होंने जो चमत्कार देखा था, उससे वे बहुत हैरान थे।

"यह कौन है?"

"यह परमेश्वर का पुत्र है।"

"यह कैसे हो सकता है? इसने हवा और पानी को आदेश दिया और उन्होंने इसकी आज्ञा मान ली।"

"सही कहा! आखिर यह कौन है कि आँधी भी इसकी आज्ञा मानती है?"

"यह अद्‌भुत है। इसने केवल अपने शब्दों से इस भयंकर आँधी को रोक दिया।"

"आह! हमने यीशु को बहुत से अद्‌भुत काम करते हुए देखा है, फिर भी हम सच में उन पर विश्वास नहीं कर पाए।"

"सही३ इसलिए उन्होंने हमसे पूछा कि हमारा विश्वास कहाँ है।"

"उन्होंने उसे जगाकर कहा, 'स्वामी! स्वामी! हम डूबने वाले हैं!' तब उसने उठकर आँधी और पानी की लहरों को डाँटाय आँधी थम गई और सब कुछ शांत हो गया।"

(लूका 8:24)



मेरे प्यारे बेटे और बेटी,

मेरे बच्चों, जब नाव हिल रही थी, तब शिष्य बहुत डरकर मेरे पास दौड़ते हुए आए। उन्होंने रोते हुए मुझे मदद के लिए जगाया। उन्हें मेरे साथ रहते हुए किसी भी बात से डरना नहीं चाहिए था, लेकिन वे मरने से बहुत डर गए थे।

मैं जानता था कि उनमें विश्वास की कमी है, फिर भी मैं उनसे बहुत प्रेम करता हूँ और मैंने तुरंत उनकी मदद की। तुम्हारे जीवन में भी ऐसी बहुत–सी परिस्थितियाँ आएँगी, जिनमें तुम्हें मेरी मदद माँगनी पड़ेगी। मेरी मदद के लिए मेरे पास दौड़कर आओ और मुझे पुकारो। लेकिन मुझे पुकारने के लिए तुम्हें मेरे करीब रहना होगा।

हर दिन प्रार्थना और आराधना करके मेरे करीब रहो, ठीक है?

तुमसे बहुत प्रेम है!

बहुत सारा प्रेम,

यीशु

प्रिय यीशु,

मैंने एक कहानी की किताब पढ़ी थी। वह एक भाई और बहन की कहानी थी, जो सूर्य और चंद्रमा बन गए थे। उस भाई–बहन ने अपनी जान बचाने के लिए आसमान से एक रस्सी नीचे लटकाई और उस रस्सी के सहारे ऊपर चले गए। उनका पीछा कर रहा डरावना बाघ भी उस रस्सी पर चढ़ने लगा, लेकिन रस्सी सड़ी हुई थी, इसलिए वह टूट गई और बाघ नीचे गिरकर मर गया।

इस कहानी को पढ़ते समय मैं आपके बारे में सोच रहा था।

यीशु, आपकी स्तुति करना, आपकी आराधना करना और आपसे प्रार्थना करना उस रस्सी के समान है, जो हमें बचाती है। लेकिन झगड़ा करना और अपने दोस्तों तथा परिवार से झूठ बोलना उस सड़ी हुई रस्सी के समान है, जो हमें नीचे गिराकर मृत्यु की ओर ले जाती है।

यीशु! जब हम आपके करीब रहेंगे, तो क्या आप हमारे आसपास के शैतान के लिए सड़ी हुई रस्सियाँ भेजेंगे, ताकि वे हमें नुकसान न पहुँचा सकें? है ना?

मैं आपसे प्रेम करता हूँ, यीशु!

प्रेम सहित,



8. पिता! मैं घर वापस जाना चाहता हूँ।

(लूका 15:11–32)

एक नगर में एक धनी व्यक्ति रहता था। उसके दो बेटे थे।

बड़ा बेटा मेहनती था और हमेशा अपने पिता की मदद करता था, जबकि छोटा बेटा हमेशा इधर–उधर घूमने और खेलने में लगा रहता था।

"पिताजी! कृपया छोटे भाई को डाँटिए। वह पेड़ के नीचे लेटकर सो रहा है और बिल्कुल भी काम नहीं कर रहा है।"

"पिताजी, पिताजी! मैं छोटे भाई से बहुत परेशान हो गया हूँ। वह आपसे यह कहकर कि काम करने जा रहा है, अपने दोस्त के घर खेलने चला गया। देखिए! अभी तक वापस नहीं आया।"

छोटा बेटा, जो केवल खेलना चाहता था, अपने भाई और पिता की बात नहीं सुनता था।

एक दिन वह अपने पिता के पास आया और उनसे कहा,

"पिताजी, मेरी संपत्ति का जो हिस्सा आप बाद में मुझे देने वाले हैं, वह अभी मुझे दे दीजिए।"

"अरे बेटा३ तुम इस पैसे का क्या करोगे?"

"पिताजी, मुझे अभी दे दीजिए। मैं अपनी जिंदगी अपनी मर्जी से जीना चाहता हूँ।"

पिता चिंतित हुए, लेकिन उन्होंने अपनी संपत्ति दोनों बेटों में बाँट दी।

कुछ दिनों बाद छोटे बेटे ने अपना पैसा इकट्ठा किया और घर छोड़कर चला गया।

वह बहुत धनवान था। इसलिए वह अलग–अलग जगहों पर घूमने लगा। उसने खाने–पीने और अपनी पसंद की चीजें खरीदने में बहुत सारा पैसा खर्च किया। वह अपनी मनमानी करता रहा।



"वाह! घर छोड़कर अपनी मर्जी से जीने में कितना मजा है! हा हा हा!"

"याय! अब मैं वही करूँगा जो मेरा मन करेगा।"

लेकिन पैसा ज्यादा दिनों तक नहीं चला।

"नहीं! मैंने सारा पैसा खर्च कर दिया! सारा पैसा कहाँ चला गया? अब मैं क्या करूँ? मुझे तो पैसे कमाने के लिए काम करना भी नहीं आता। मुझे अपने भाई से काम करना सीखना चाहिए था।"

"आह३ अकाल के कारण लोगों के पास भी खाने के लिए कम है और मेरे पास तो पैसे भी नहीं हैं। अब मुझे खाना कहाँ से मिलेगा?"

वह बहुत भूखा था, इसलिए खाने के लिए इधर–उधर माँगने लगा।

"मुझे बहुत भूख लगी है। कृपया मुझे कुछ खाने के लिए दे दीजिए।"

"अरे! अगर तुम मेरे सूअरों को खाना खिलाओगे, तो मैं तुम्हें कुछ खाने को दूँगा।"

छोटा बेटा सूअरों को खाना खिलाते हुए बहुत भूखा महसूस कर रहा था।

"आह३ मुझे बहुत भूख लगी है। काश, मैं इन सूअरों का खाना ही खा पाता।"

"सूअरों की जिंदगी कितनी अच्छी है! तुम लोग खाते हो, सोते हो, फिर खाते हो और सोते हो। आह मुझे भी सूअरों के लिए खाना माँगने जाना चाहिए।"

लेकिन कोई भी उसे खाने के लिए कुछ नहीं देता था।

"मेरी जिंदगी के साथ यह क्या हो गया? हुंह३ मैं कितना दुखी हूँ! अरे हाँ! मेरे पिता हैं। उनके सेवकों को भी भरपूर खाना मिलता है। अगर मैं उनके घर वापस चला जाऊँ, तो मुझे अच्छा खाना मिल सकेगा।"

"लेकिन मैं फिर से उनका सामना कैसे करूँगा? आह३ मुझे अपने पिता के पास जाकर उनसे कहना चाहिए कि वे मुझे अपना सेवक बना लें।"



वह कमजोर कदमों से घर की ओर चल पड़ा और उसने देखा कि उसके पिता द्वार पर खड़े हैं। पिता अपने छोटे बेटे को देखते ही उसकी ओर दौड़े। हालाँकि छोटा बेटा एक भिखारी जैसा दिखाई दे रहा था, फिर भी पिता ने उसे तुरंत पहचान लिया कि वह उनका छोटा बेटा ही है। पिता उसे गले लगाकर रोने लगे और उसे चूमने लगे।

"ओह, मेरे बेटे३ क्या तुम्हें पता है कि मैं कितने समय से तुम्हारा इंतजार कर रहा था? मैं हर शाम सूर्यास्त के समय यहाँ खड़ा होकर तुम्हारी राह देखता था। क्या सचमुच तुम वापस आ गए हो?"

"पिताजी, मुझे बहुत अफसोस है। मैंने आपका सारा पैसा खर्च कर दिया और अब एक भिखारी की तरह वापस आया हूँ। आह३ कृपया मुझे माफ कर दीजिए। मुझे अपने सेवक के रूप में रहने दीजिए और खाने के लिए कुछ भोजन दे दीजिए।"

"तुम सेवक बनने की बात क्यों कर रहे हो? तुम मेरे बेटे हो। आज खुशी का दिन है। मेरा बेटा, जिसे मैं मरा हुआ समझता था, जीवित लौट आया है। आओ, हम उत्सव मनाएँ!"

पिता और बेटा एक–दूसरे का चेहरा देखते हुए लगातार रो रहे थे।

फिर पिता ने अपने सेवकों से कहा,

"सबसे अच्छे कपड़े लाओ और इसे पहनाओ। इसके हाथ में एक अंगूठी पहनाओ और इसके पैरों में अच्छे जूते पहनाओ। सबसे अच्छा बछड़ा लाओ और उसे पकाकर खाने के लिए बहुत सारा भोजन तैयार करो। आओ, मेरे लौटे हुए बेटे के लिए उत्सव मनाएँ।"

छोटा बेटा वापस अपने घर आ गया और फिर अपने पिता के बेटे के रूप में रहने लगा।

"मेरे बेटे," पिता ने कहा, "तुम हमेशा मेरे साथ हो, और जो कुछ मेरा है वह सब तुम्हारा है। लेकिन हमें खुश होकर उत्सव मनाना ही था, क्योंकि तुम्हारा यह भाई मर गया था और अब फिर जीवित हो गया हैय वह खो गया था और अब मिल गया है।" (लूका 15:31–32)



मेरे प्यारे बेटे और बेटी,

आज की कहानी पूरी तरह प्रभु के प्रेम के बारे में है।

प्रभु का प्रेम बिल्कुल उसी तरह है, जैसे उस पिता का अपने बेटे के प्रति प्रेम था। यदि तुम उससे दूर रह रहे हो, तब भी प्रभु तुम्हारा इंतजार करता है। जैसे वह पिता हर दिन अपने बेटे की राह देखता था, वैसे ही प्रभु भी तुम्हारे लौटकर आने का इंतजार करता है। वह चाहता है कि तुम उसे पुकारो और परमेश्वर की संतान के रूप में जीवन बिताओ।

यदि तुम परमेश्वर की संतान के रूप में जीवन नहीं जी रहे हो, तो आइए, अभी हम प्रभु से प्रार्थना करें, ताकि तुम अपने पिता, हमारे प्रभु के पास वापस लौट सको।

हमारा प्रभु भला है, क्योंकि वह हमारा पिता है।

तुमसे बहुत प्रेम है।

बहुत सारा प्रेम,

यीशु

प्रिय यीशु,

यीशु! क्या पिता का प्रेम परमेश्वर के प्रेम के समान है?

मैं सोचता था कि माँ का प्यार हमेशा पिता के प्यार से बड़ा होता है।

मेरी माँ मेरे साथ अधिक समय बिताती हैं, लेकिन मैं अपने पिता को केवल रात में देख पाता हूँ, जब वे काम से घर लौटते हैं। लेकिन मैंने सुना है कि वे हमारे परिवार को खुश रखने के लिए बहुत मेहनत करते हैं। उन्हें भी मेरे साथ खेलना काम पर जाने से ज्यादा पसंद है। इसलिए मैंने समझा कि मेरे माँ और पिता दोनों मुझसे समान प्रेम करते हैं।

मैं सोचता था कि यीशु मुझसे प्रभु से भी अधिक प्रेम करते हैं, लेकिन अब मुझे पता चला कि प्रभु भी मुझसे उतना ही प्रेम करते हैं। प्रभु और यीशु एक हैं, इसलिए उनका प्रेम भी मेरे लिए एक समान है, है ना?

मैं आपसे प्रेम करता हूँ, प्रभु!

मैं आपसे प्रेम करता हूँ, यीशु!

प्रेम सहित,



9. जक्कई, मेरे पास नीचे आ जाओ।

(लूका 19:1–10)

यीशु यरीहो में प्रवेश कर रहे थे और वहाँ से होकर जा रहे थे। जक्कई भीड़ में यीशु को देखने के लिए आगे बढ़ा।

"कृपया मुझे बीच में जाने दीजिए। मैं भी यीशु को देखना चाहता हूँ।"

जक्कई कद में बहुत छोटा था। वह लोगों के बीच कितना भी उछलकर यीशु को देखने की कोशिश करता, फिर भी उसे यीशु दिखाई नहीं दे रहे थे। इसके अलावा, वह एक कर–वसूलने वाला व्यक्ति था, जिससे यहूदी लोग बहुत नफरत करते थे। इसलिए लोग उसे आगे जाने नहीं दे रहे थे।

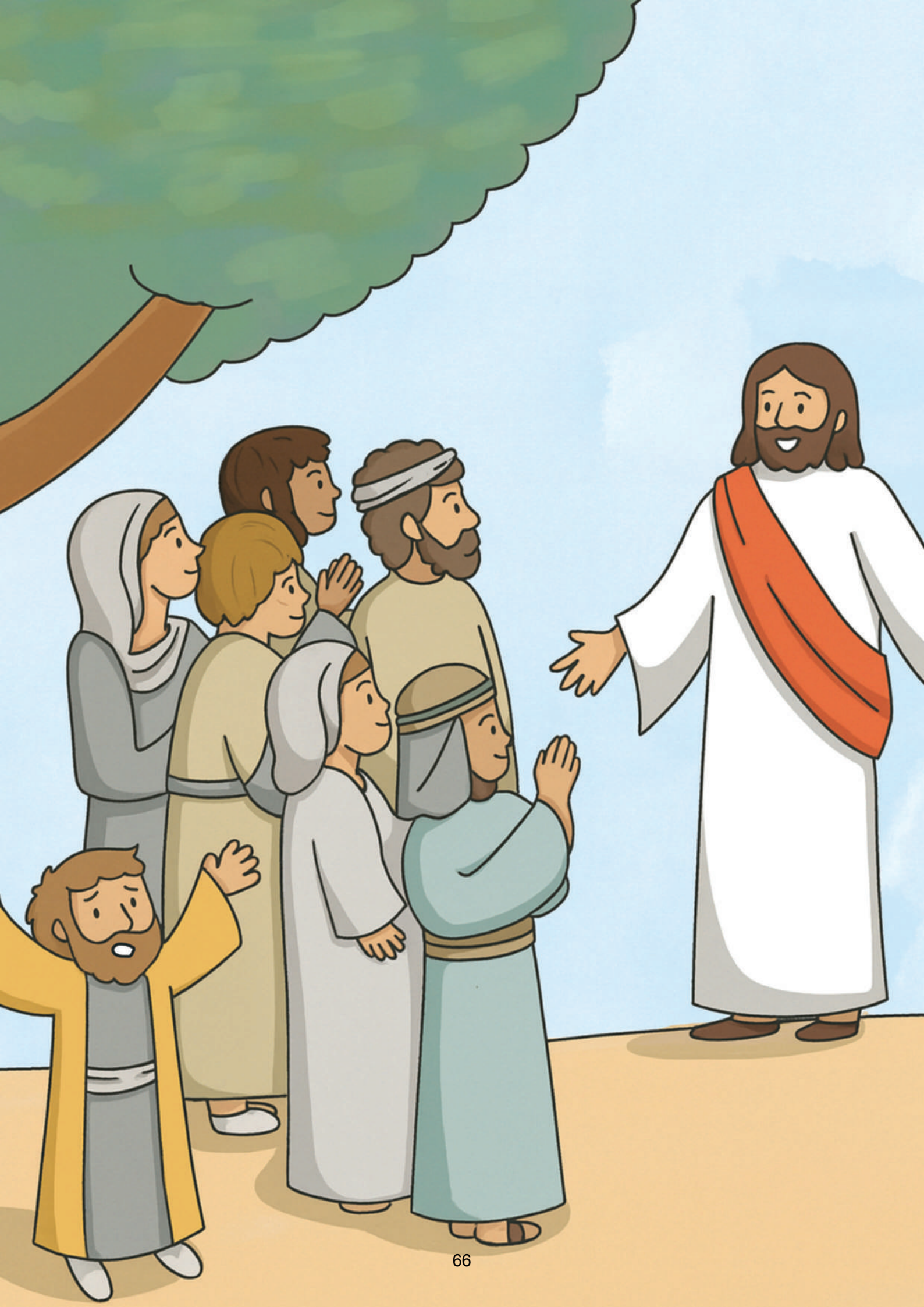
"यहाँ से चले जाओ। तुम्हारे जैसे पापी को यीशु को देखने का कोई अधिकार नहीं है।"

जक्कई उदास होकर भीड़ से चुपचाप बाहर निकल गया।

"आह३ आज मैं सच में यीशु को देखना चाहता था। मैं इतना छोटा हूँ कि पीछे खड़े होकर उन्हें देख भी नहीं सकता, और लोग मुझसे इतनी नफरत करते हैं कि वे मुझे आगे जाने में मदद भी नहीं करेंगे। हूँ३"

लेकिन उसने हार मानकर वापस जाने का फैसला नहीं किया।

"क्या यीशु को देखने का कोई और अच्छा रास्ता है? यीशु! मैं सच में आपसे मिलना चाहता हूँ।"



फिर जक्कई ने अपने सामने एक गूलर का पेड़ देखा।

"हाँ! मैं इस पेड़ पर चढ़ जाता हूँ। तब मैं यीशु को देख पाऊँगा। बिल्कुल! यीशु इसी पेड़ के पास से होकर जाएँगे।"

जक्कई यीशु के आने वाले रास्ते पर आगे दौड़ा और गूलर के पेड़ पर चढ़ गया।

"वाह! मुझे यीशु दिखाई दे रहे हैं।"

लोगों ने जक्कई को पेड़ पर देखा और उसे आवाज लगाई।

"नीचे उतर आओ। यह खतरनाक है।"

"नहीं! आज मुझे यीशु को देखना ही है। अगर मैं नीचे उतर गया, तो मैं बहुत छोटा हूँ और उनका चेहरा नहीं देख पाऊँगा। और तुम लोगों ने मुझे आगे जाने भी नहीं दिया। यहाँ से मुझे यीशु बहुत अच्छी तरह दिखाई दे रहे हैं। मैं नीचे नहीं उतरूँगा।"

यीशु उस पेड़ के नीचे से होकर आगे बढ़ रहे थे।

तभी यीशु रुक गए और ऊपर देखकर जक्कई को देखा।

"आह! यीशु ने मेरी ओर देखा। वह मुझे देख रहे हैं। ऐसा लग रहा है जैसे मैं उनकी आँखों में खुद को देख सकता हूँ। यह तो अविश्वसनीय है३"



जक्कई बहुत खुश हुआ और उसका दिल तेजी से धड़कने लगा।

तब यीशु ने जक्कई से कहा,

"जक्कई! जल्दी से नीचे उतर आओ। आज मुझे तुम्हारे घर में ठहरना है।"

"यीशु! क्या आप सचमुच मेरे जैसे व्यक्ति के घर आएँगे? हर कोई मुझसे नफरत करता है। लोग अभी भी मेरे बारे में आपस में फुसफुसाकर बातें कर रहे हैं। क्या आप सच में मेरे घर आएँगे?"

यीशु मुस्कुराए और सिर हिलाकर हाँ कहा।

जब जक्कई ने यीशु की बात सुनी, तो उसे ऐसा लगा जैसे वह बादलों पर तैर रहा हो। वह इतना उत्साहित था कि उसके चेहरे की खुशी छिपाए नहीं छिप रही थी।

वह जल्दी से नीचे उतरा और यीशु को अपने घर ले गया।

"जक्कई! आज इस घर में उद्धार आया है, क्योंकि यह व्यक्ति भी अब्राहम की संतान है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।"

यीशु ने जक्कई के घर में सुसमाचार सुनाया।

यीशु से मिलकर जक्कई बहुत खुश हुआ और उसने वादा किया कि वह अपनी आधी संपत्ति गरीबों को दे देगा।

"यीशु ने उससे कहा, 'आज इस घर में उद्धार आया है, क्योंकि यह भी अब्राहम का पुत्र है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने

और उनका उद्धार करने आया है।'"

(लूका 19:9–10)



मेरे प्यारे बेटे और बेटी,

लोग अक्सर किसी व्यक्ति को उसके बाहरी रूप और व्यवहार के आधार पर आँकते हैं, लेकिन मैं व्यक्ति के हृदय को देखता हूँ। जब मैं उस पेड़ के पास से गुजर रहा था, तो मैंने जक्कई के उस सच्चे और उत्सुक हृदय को देखा, जो मुझे देखने के लिए बड़ी लगन से पेड़ पर चढ़ गया था।

जब मैंने ऊपर देखकर जक्कई की आँखों में देखा, तो उसकी आँखों में चमक थी। मुझे ऐसा लगा जैसे उसकी आँखों में अनगिनत सच्चे हृदय दिखाई दे रहे हों। हा हा हा!

यदि तुम पूरे मन से प्रार्थना करोगे, तो मैं तुमसे भी मिलूँगा।

जब तुम मेरे वचन पढ़ोगे, मुझसे प्रार्थना करोगे, पूरे मन से मेरी स्तुति करोगे और सच्चे हृदय से मेरी आराधना करोगे, तब मैं भी तुम्हारे पास आने में देर नहीं करूँगा।

तुमसे बहुत प्रेम है।

बहुत सारा प्रेम,

यीशु

प्रिय यीशु,

यीशु! मैं अभी भी जक्कई की तरह छोटा हूँ। किसी ऊँची चीज को देखने के लिए मुझे हमेशा पंजों के बल खड़ा होना पड़ता है। लेकिन मेरे दोस्त मुझे अपने आगे नहीं जाने देते, इसलिए मैं थोड़ा समझ सकता हूँ कि जक्कई को कैसा महसूस हुआ होगा।

मैं जब भी आराधना करने जाता हूँ, तो हमेशा पहली पंक्ति में बैठता हूँ, ताकि मुझे अच्छी तरह दिखाई दे। अगर मैं पीछे बैठ गया और मेरे लंबे दोस्त मुझे ढक लें, तो क्या होगा? हा हा हा!

"यीशु, मैं आपसे प्रेम करता हूँ। कृपया मेरे पास आइए और मेरे साथ रहिए।"

प्रेम सहित,



10. बच्चों को मेरे पास आने दो।

(मत्ती 19:13–15, मरकुस 10:13–16, लूका 18:15–17)

यीशु लोगों को स्वर्ग के राज्य के रहस्य बता रहे थे। लोग अपने छोटे–छोटे बच्चों को यीशु के पास आशीर्वाद दिलाने के लिए लेकर आए। लेकिन वहाँ बहुत भीड़ थी, इसलिए वे अपने बच्चों को यीशु के पास नहीं ले जा पा रहे थे।

बच्चे यीशु को देखने के लिए आगे बढ़े। तब शिष्यों ने उन्हें डाँटा।

"बच्चों, तुम कहाँ जा रहे हो? यह तुम्हारे आने की जगह नहीं है। चले जाओ!"

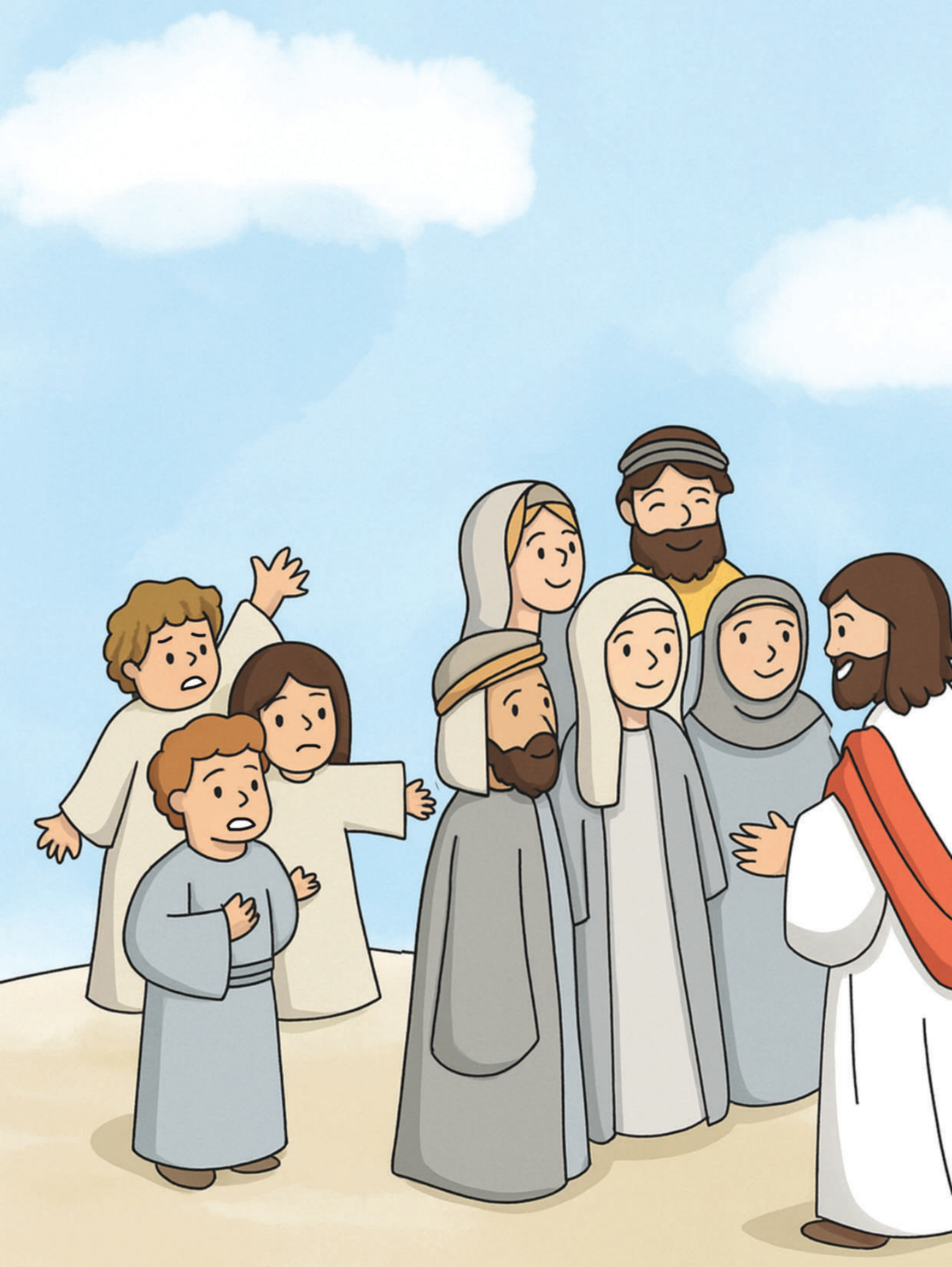
"अंकल पतरस! हमें यीशु को देखना है। कृपया हमें यीशु के पास ले चलिए।"

"बस करो! क्या तुम चुप नहीं रह सकते? तुम्हारे माता–पिता कहाँ हैं? अभी अपने माता–पिता के पास जाओ।"

"अंकल, प्लीज३ हम बिल्कुल शांत रहेंगे। कृपया हमें यीशु का चेहरा देखने दीजिए।"

शिष्य बच्चों को लगातार पीछे हटाते रहे।

"अब हम क्या करें? हमें यीशु से मिलना है३ लेकिन यह तो असंभव लग रहा है। लगता है आज हम यीशु से नहीं मिल पाएँगे। चलो, अगली बार आएँगे।"



बच्चों ने हार मान ली और वहाँ से जाने ही वाले थे।

तभी यीशु अपने शिष्यों के पास आए और उनसे नाराज हुए।

"छोटे बच्चों को मेरे पास आने से मत रोको।"

यीशु के ये शब्द सुनते ही बच्चों के कदम रुक गए।

शिष्यों को डाँटते हुए यीशु की आवाज से बच्चों को महसूस हुआ कि यीशु उनसे कितना प्रेम करते हैं और उनकी कितनी परवाह करते हैं। यीशु ने फिर कहा,

"परमेश्वर का राज्य ऐसे ही लोगों का है, जो इन छोटे बच्चों के समान हैं। मेरे बच्चों, मेरे पास आओ।"

बच्चे भीड़ के बीच से दौड़ते हुए यीशु के पास पहुँचे।

"यीशु! यीशु!"

"मेरे प्यारे बच्चों, कहीं गिर न जाना। धीरे–धीरे, धीरे–धीरे।"

"यीशु! यीशु! हूँ। हूँ।"

"बच्चों को मेरे पास आने के लिए रास्ता दो।"

यीशु ने बच्चों को अपनी गोद में बैठाया और उन्हें अपने बहुत पास आने दिया। बच्चे उनके इतने करीब बैठे थे कि वे यीशु को अच्छी तरह देख और उनकी बातें सुन सकते थे। वे बहुत खुश थे।



फिर यीशु ने लोगों से कहा,

"यदि तुम इन बच्चों के समान नहीं बनोगे, तो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।"

यीशु ने स्पष्ट रूप से कहा कि जो व्यक्ति एक छोटे बच्चे की तरह परमेश्वर के राज्य को स्वीकार नहीं करता, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएगा।

"यीशु, यीशु! क्या आपका मतलब है कि हमारे जैसे बच्चे भी स्वर्ग में जा सकते हैं?"

"हाँ, बिल्कुल। स्वर्ग तुम जैसे बच्चों के लिए भी है।"

"वाह! कितना रोमांचक है! यीशु ने कहा कि हमारे जैसे बच्चे स्वर्ग में जा सकते हैं। मैं बहुत खुश हूँ।"

यीशु की बातें सुनकर बच्चे बहुत खुश हुए।

फिर यीशु ने बच्चों को अपनी बाँहों में लिया, उन पर हाथ रखा और उन्हें आशीर्वाद दिया।

"मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो कोई परमेश्वर के राज्य को छोटे बच्चे के समान ग्रहण नहीं करता, वह उसमें कभी प्रवेश नहीं कर सकता।" और उन्होंने बच्चों को अपनी बाँहों में लिया, उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीर्वाद दिया।

(मरकुस 10:15–16)



मेरे प्यारे बेटे और बेटी,

मुझे तुम लोग बहुत पसंद हो। तुम दयालु, पवित्र और प्यारे हो, इसलिए बहुत सुंदर लगते हो। जब मैं तुम्हें देखता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं स्वर्ग को देख रहा हूँ।

तुम बिना कुछ माँगे और बिना किसी स्वार्थ के मुझे देखते हो, लेकिन बड़े लोग मुझे देखते समय अपने आसपास की चीजों को छोड़ नहीं पाते।

हमेशा मेरे वचनों के अनुसार जीवन जीने की कोशिश करो, ताकि जब मैं तुम्हें देखूँ तो मुझे तुम्हारे अंदर स्वर्ग दिखाई देता रहे।

मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे ऐसे बच्चे बनो, जो सुंदर हृदय से मुझ पर विश्वास करें और मेरे वचन के अनुसार जीवन जिएँ।

मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।
बहुत सारा प्रेम,
यीशु

प्रिय यीशु,

यीशु! मैं बहुत खुश हूँ। आप मेरे जैसे एक छोटे बच्चे के पक्ष में हैं।
मुझे यह सुनकर बहुत खुशी हुई कि स्वर्ग का राज्य बच्चों के समान हृदय रखने वालों के लिए है।

मैं हमेशा यीशु के वचनों के अनुसार जीवन जीने की कोशिश करूँगा, ताकि मेरे अंदर स्वर्ग की एक सुंदर तस्वीर दिखाई दे।

इसलिए मैं ऐसा बच्चा बनूँगा जिसकी यीशु यह कहकर प्रशंसा करें, "तुम जैसे बच्चे स्वर्ग में जा सकते हैं।"

मैं आपसे प्रेम करता हूँ, यीशु!

प्रेम सहित,



11. मरा हुआ लाज़र जीवित हो गया।

(यूहन्ना 11:1-44)

यीशु लोगों को उपदेश दे रहे थे। तभी अचानक कोई वहाँ आया और यीशु से बात करने लगा।

“यीशु! मैं अभी बैतनिय्याह से आया हूँ। मरियम और मार्था का भाई लाज़र, जिससे आप प्रेम करते हैं, बहुत बीमार है और धीरे-धीरे मर रहा है। उन्होंने मुझे आपको यह बताने के लिए भेजा है।”

“जाकर उनसे कहो। यह बीमारी मृत्यु में समाप्त नहीं होगी, बल्कि यह परमेश्वर की महिमा के लिए है। इसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा होगी।”

यीशु वहाँ दो दिन और रहे और फिर लाज़र के पास गए।

जब वे बैतनिय्याह पहुँचे, तब लाज़र को मरे और दफनाए हुए चार दिन हो चुके थे। जैसे ही मार्था ने सुना कि यीशु आ गए हैं, वह दौड़कर उनके पास गई।

“यीशु! सिसकते हुए... आप अब क्यों आए हैं? यदि आप यहाँ होते, तो मेरा भाई नहीं मरता। वह पहले ही मर चुका है... यीशु! कृपया कुछ कहिए। मुझे विश्वास है कि यदि आप अभी भी परमेश्वर से कुछ माँगेंगे, तो परमेश्वर आपको वह सब कुछ देंगे जो आप माँगेंगे।”

“मार्था! तुम्हारा भाई फिर से जी उठेगा।”

“यीशु! मैं जानती हूँ। अंतिम दिन पुनरुत्थान के समय मेरा भाई फिर से जी उठेगा।”



“मेरी प्यारी मार्था! मेरी बात ध्यान से सुनो। मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ। जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मरने पर भी जीवित रहेगा। और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा। क्या तुम इस बात पर विश्वास करती हो?”

“हाँ। हाँ, बिल्कुल। मैं विश्वास करती हूँ कि आप मसीह हैं, परमेश्वर के पुत्र, जो संसार में आने वाले हैं।”

“हाँ, मार्था! यह सही है। लेकिन मरियम तुम्हारे साथ क्यों नहीं आई? जाओ और उससे कहो कि मैं उसे बुला रहा हूँ।”

मार्था घर गई और चुपचाप मरियम को बुलाया।

“मरियम। यीशु तुम्हें बुला रहे हैं।”

“क्या? यीशु? वह अभी कहाँ हैं?”

मरियम दौड़कर यीशु के पास गई।

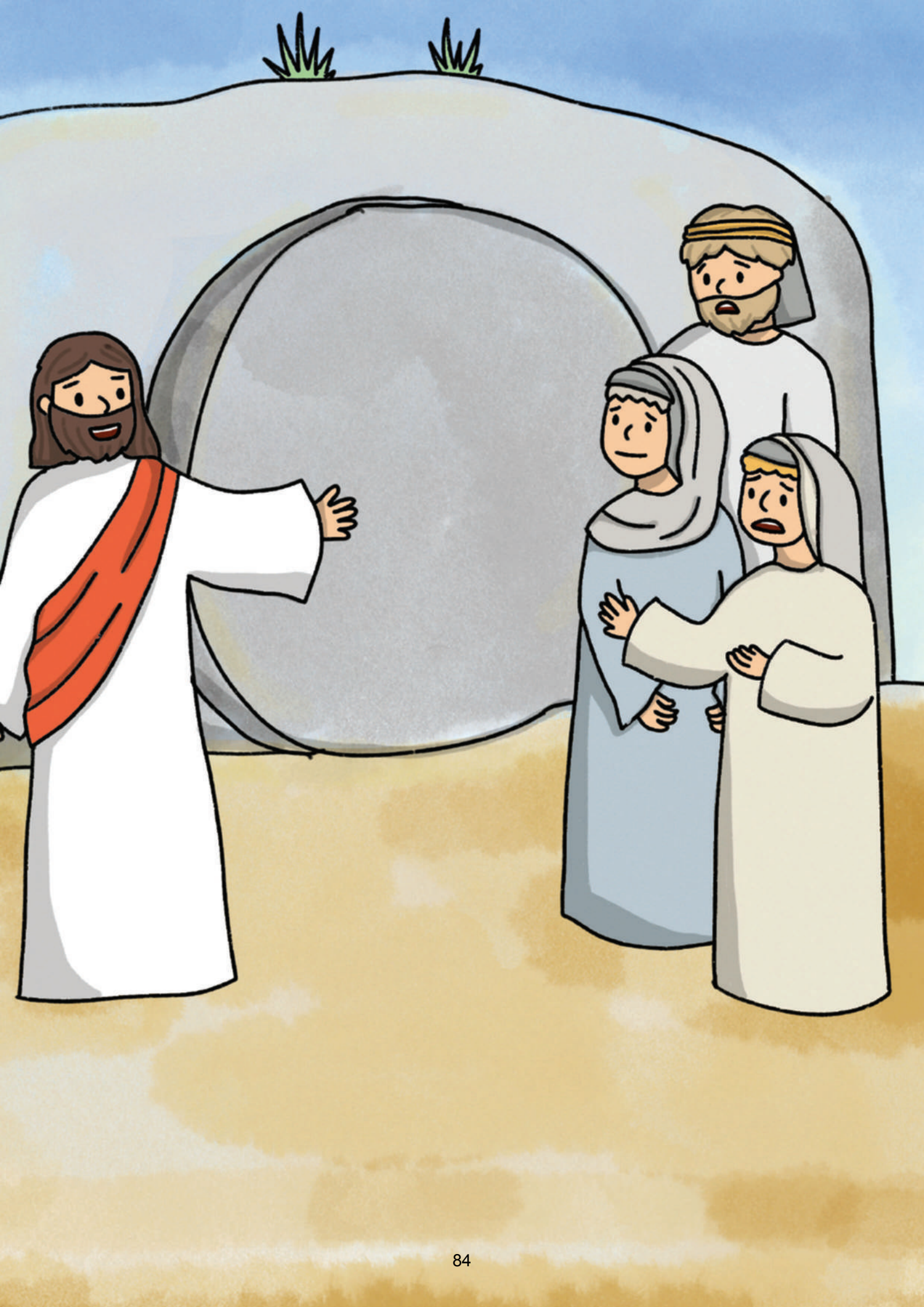
“यीशु। सिसकते हुए... मेरा भाई, जिससे आप प्रेम करते हैं, मर गया है। प्रभु, यदि आप यहाँ होते, तो वह नहीं मरता। सिसकते हुए...”

“मरियम... बस। अब रोना बंद करो। तुम्हारे भाई को कहाँ दफनाया गया है?”

लाज़र की कब्र के सामने मरियम रोई, और नगर के जो लोग उसके पीछे आए थे, वे भी रोए, और यीशु भी रोए।

कब्र के प्रवेश द्वार पर एक पत्थर लगा हुआ था। यीशु ने आज्ञा दी।

“पत्थर को हटाओ।”



तब मार्था ने यीशु से कहा,

“यीशु! मेरे भाई को मरे हुए चार दिन हो गए हैं। अब तो उसमें से बदबू आने लगी होगी।”

“मार्था! क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि यदि तुम केवल विश्वास करोगी, तो तुम परमेश्वर की महिमा देखोगी? क्या तुम इतनी जल्दी भूल गई?”

मार्था और मरियम ने लोगों के साथ मिलकर पत्थर हटाया। तब यीशु ने ऊँची आवाज़ में पुकारा।

“लाज़र, बाहर आओ!”

तभी कब्र के अंदर से कदमों की आवाज़ सुनाई दी, और मरा हुआ लाज़र चलकर बाहर आया।

“उसके ऊपर लिपटे कपड़े खोल दो और उसे जाने दो।”

मरियम और उसके भाई लाज़र ने एक-दूसरे की आँखों में देखा।

“हल्लेलूयाह, यीशु। मेरा मरा हुआ भाई जीवित हो गया है।”

यीशु ने मरियम की ओर देखा और उज्ज्वल मुस्कान के साथ मुस्कुराए।

लाज़र को फिर से जीवित हुआ देखकर बहुत से लोगों ने यीशु पर विश्वास किया।

(यीशु ने उससे कहा, “मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ। जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मरने पर भी जीवित रहेगा; और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा। क्या तुम इस बात पर विश्वास करती हो?”

(यूहन्ना 11:25-26))



मेरे प्यारे बेटे और बेटी,

क्या तुम लाज़र की कहानी पर विश्वास करते हो, जो फिर से जीवित हो गया?

मैंने मरे हुए लाज़र को जीवित किया और बीमार लोगों को चंगा किया।

मैं तुम्हारे लिए सब कुछ करूँगा, मेरे बच्चों।

तुम्हें बस मुझ पर विश्वास करना है और मुझसे प्रार्थना करनी है।

“यीशु, मेरी प्रार्थना सुनिए। और यीशु, मैं आपसे मिलना चाहता/चाहती हूँ।”

मैं तुम्हारे इस तरह प्रार्थना करने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।

ढेर सारा प्यार,

प्यारे यीशु,

यीशु! आपने मरे हुए लाज़र को फिर से जीवित कर दिया!

मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं आपकी आवाज़ सुन सकता/सकती हूँ, जो पुकार रही है, “लाज़र!”

यीशु! जब मैं आपसे प्रार्थना करूँ, तो कृपया उसी तरह मेरा नाम भी पुकारिए।

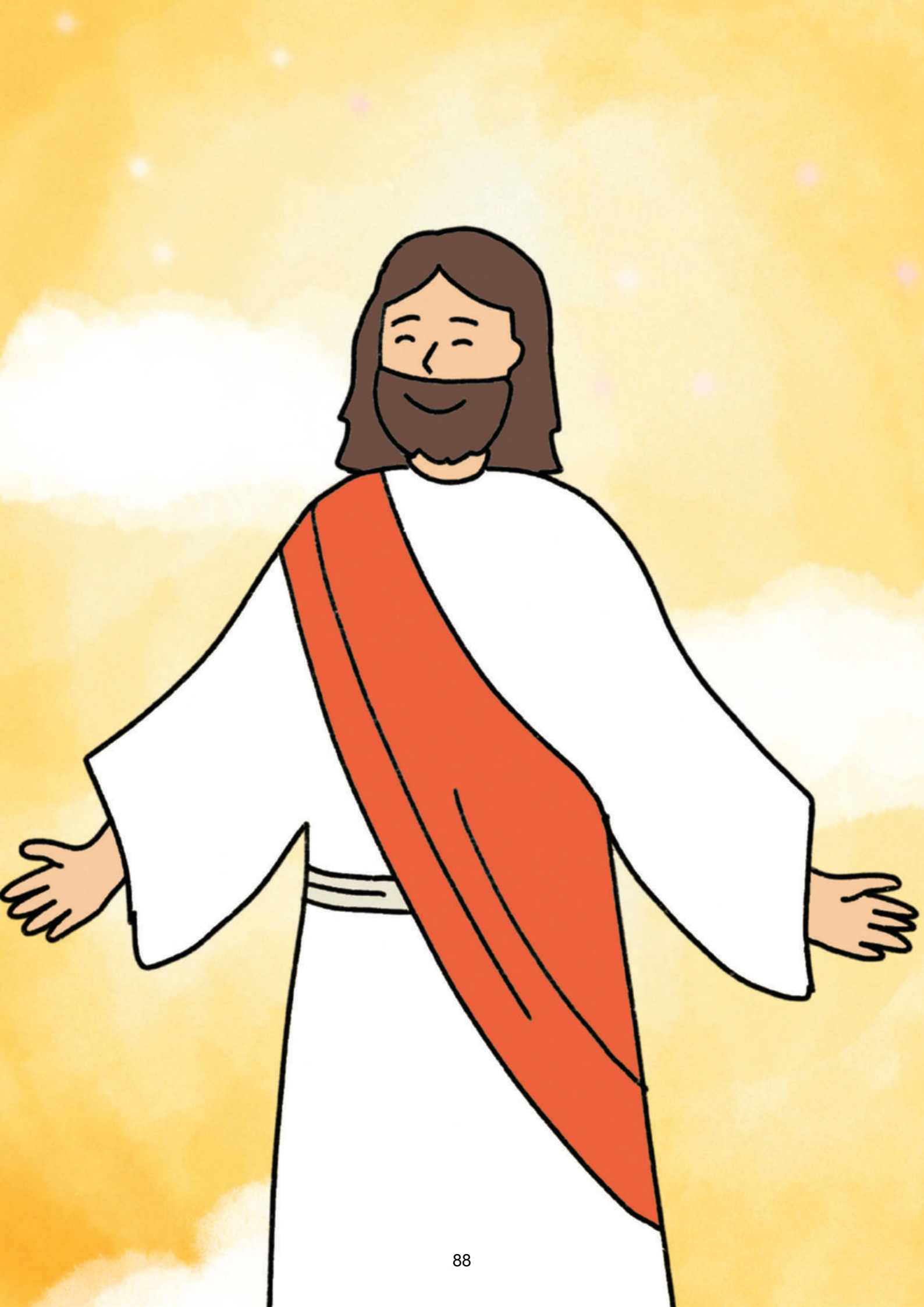
मैं आपकी प्रेम से भरी आवाज़ सुनने की आशा करते हुए प्रार्थना करूँगा/करूँगी।

जब तक आप मेरी प्रार्थना का उत्तर नहीं देते, मैं प्रार्थना करता/करती रहूँगा/रहूँगी।

मैं आपसे प्रेम करता/करती हूँ, यीशु!

प्यार सहित,

मैं



12. छोटी बच्ची, उठो!

(मत्ती 9:18–26, मरकुस 5:35–43, लूका 8:40–56)

यीशु नाव से झील के दूसरी ओर गए। वहाँ किनारे पर पहले से ही लोगों की एक बड़ी भीड़ जमा थी, इसलिए यीशु वहीं रुक गए।

फिर आराधनालय का एक सरदार, जिसका नाम याईर था, यीशु के पास आया और उनके पैरों पर गिर पड़ा।

"यीशु! हुं। हुं।"

"तुम इतने दुखी होकर क्यों रो रहे हो? मुझे बताओ।"

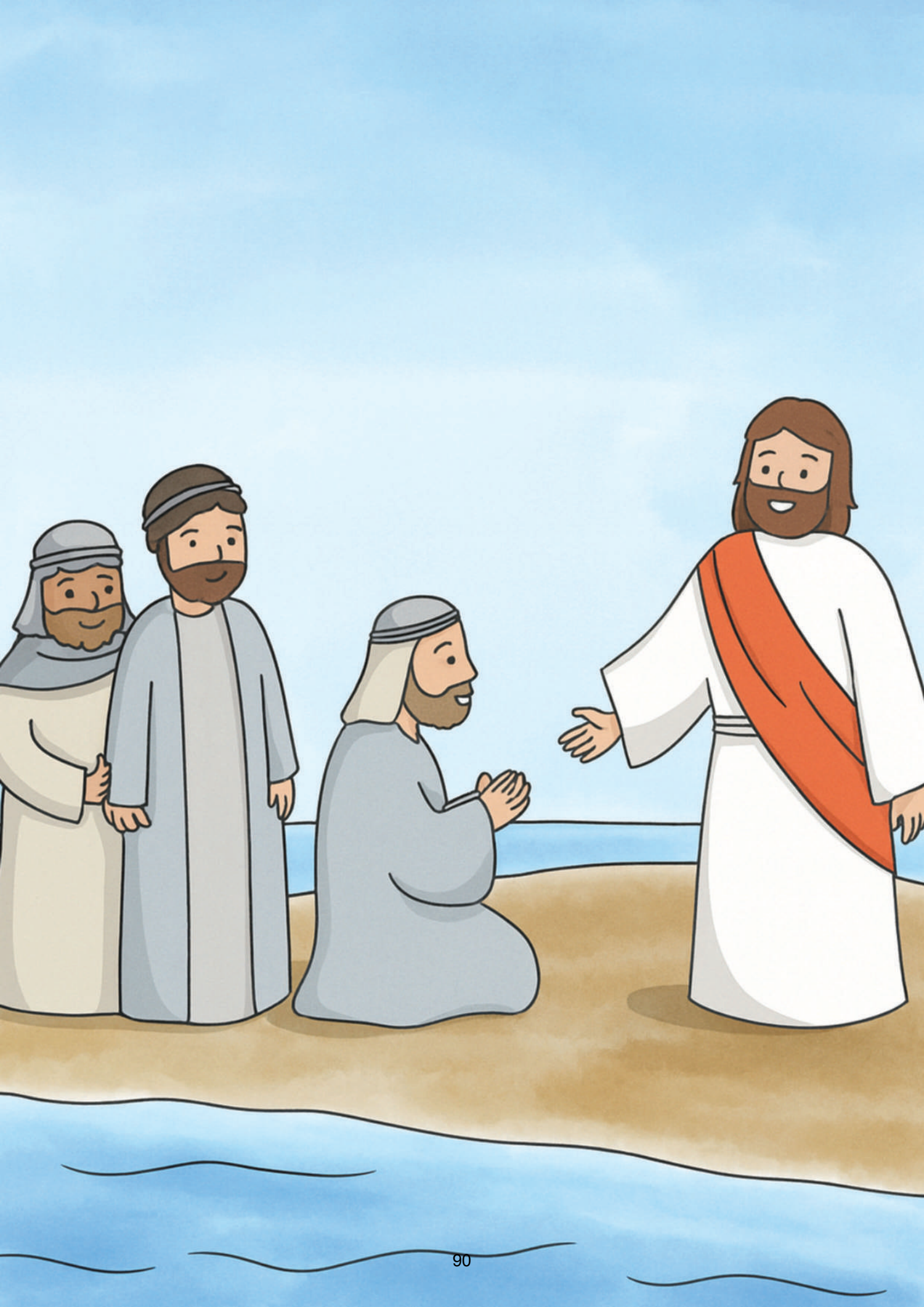
"प्रभु! मेरी बारह वर्ष की बेटी है। वह बहुत बीमार है और मरने वाली है। कृपया मेरे साथ चलकर मेरी बेटी को बचा लीजिए।"

"ओह! अच्छा, चलो तुम्हारी बेटी के पास चलते हैं।"

जब यीशु आराधनालय के सरदार याईर के साथ जाने लगे, तो लोगों की एक बड़ी भीड़ उनके पीछे चल पड़ी।

कुछ दूर चलने के बाद याईर के घर से कुछ लोग आए और उन्होंने कहा,

"याईर! तुम्हारी बेटी मर गई है। अब यीशु को परेशान मत करो।"



"क्या? मेरी बेटी यीशु! अब मैं क्या करूँ?"

जब यीशु ने यह सुना, तो उन्होंने याईर को ढाढ़स दिया।

"याईर, डरो मत। केवल विश्वास रखो।"

यीशु ने कहा,

"पतरस, याकूब और याकूब का भाई यूहन्ना मेरे साथ चलेंगे। बाकी सभी लोग वापस चले जाएँ।"

यीशु उनके साथ याईर के घर में गए।

वहाँ लोग रो–रोकर विलाप कर रहे थे।

"बेचारी बच्ची अभी तो वह बहुत छोटी थी हाय"

"आखिर वह मर ही गई। अपने बच्चे को इतनी जल्दी खोने के बाद वे कैसे जी पाएँगे?"

यीशु घर के अंदर आए और कहा,

"तुम लोग इतना क्यों रो रहे हो? बच्ची मरी नहीं है, बल्कि सो रही है।"

"यीशु! मेरी बेटी तो मर चुकी है। अब वह साँस भी नहीं ले रही है।"

"ओह, मेरी बच्ची३ मेरी प्यारी बच्ची हे प्रभु! अब मैं अपनी प्यारी बेटी को कभी नहीं देख पाऊँगा३ मैं उसे छू नहीं पाऊँगा, उससे बात नहीं कर पाऊँगा और उसकी आवाज में 'पिताजी' भी नहीं सुन पाऊँगा"

वह सिसक–सिसक कर रोने लगा।

"याईर, अपने आप को दुखी मत करो। तुम्हारी बेटी मरी नहीं है, बल्कि केवल सो रही है।"

जिन लोगों ने यीशु को यह कहते सुना कि वह "सो रही है", वे यीशु पर हँसने लगे।



फिर यीशु अपने शिष्यों और उस बच्ची के माता–पिता के साथ उस कमरे में गए जहाँ बच्ची थी। यीशु ने बच्ची का हाथ पकड़ा और कहा,

"तलीता कूमी!"

इसका अर्थ है, "हे छोटी बच्ची, मैं तुझसे कहता हूँ, उठ!"

तब वह बच्ची उठकर चलने लगी। यह देखकर वहाँ मौजूद लोग बहुत आश्चर्यचकित हुए।

"यीशु! मेरी बेटी सचमुच जीवित है। ऐसा लगता है जैसे वह अभी–अभी नींद से जागी हो। हे प्रभु! धन्यवाद! आपका बहुत–बहुत धन्यवाद!"

यीशु उस बच्ची को उठकर चलते हुए देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

"इस बच्ची को कुछ खाने के लिए दो।"

"वाह! तुम्हें खाते हुए देखकर मुझे विश्वास हो रहा है कि तुम सचमुच जीवित हो। मेरी बेटी वास्तव में जीवित है। मेरी आँखों के सामने चमत्कार हुआ है!"

यीशु ने उन्हें बहुत कड़ाई से आदेश दिया कि इस घटना के बारे में किसी को न बताएँ। लेकिन लोग अपने आप को रोक नहीं पाए और जिस किसी से भी मिले, उसे उस बच्ची के बारे में बताने लगे, जिसे यीशु ने जीवित किया था।

"उसने उसका हाथ पकड़कर उससे कहा, 'तलीता कूमी!' जिसका अर्थ है, 'हे छोटी बच्ची, मैं तुझसे कहता हूँ, उठ!'"

(मरकुस 5:41)



मेरे प्यारे बेटे और बेटी,

मैं याईर की बेटी से बहुत प्रेम करता था, इसलिए मैंने उसे मृत्यु से बचा लिया।

क्योंकि परमेश्वर तुमसे भी उतना ही प्रेम करता है, जितना वह उससे करता था। परमेश्वर ने तुम्हें भी बचाया है। तुम पापी थे और पाप के कारण मृत्यु के योग्य थे। इसलिए उसने अपने पुत्र, मुझे, तुम्हारे पास भेजा, ताकि मैं तुम्हारे पापों को अपने ऊपर लेकर तुम्हें बचा सकूँ।

इसलिए यदि तुम मुझ पर विश्वास करो और अपने पापों से मन फिराओ, तो तुम्हारे पाप क्षमा कर दिए जाएँगे और तुम परमेश्वर के राज्य के जन बन जाओगे।

मेरे बच्चों, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ!

बहुत सारा प्रेम,

यीशु

प्रिय यीशु,

यीशु, धन्यवाद।

आप आज भी मुझसे प्रेम करते हैं और मेरा हाथ पकड़कर मुझे उठने के लिए कहते हैं।

मेरी इच्छा है कि मेरे परिवार के सभी लोग उस भले यीशु पर विश्वास करें, जो हमसे इतना प्रेम करता है। यदि वे यीशु पर विश्वास नहीं करेंगे, तो उन्हें जलती हुई नरक की आग में जाना पड़ेगा। मैं बहुत डर जाता हूँ।

यीशु! आज मौसम भी ठीक नहीं है। यह अब तक का सबसे गर्म मौसम लग रहा है। जब मैं बाहर जाता हूँ, तो गर्म जमीन ऐसी लगती है जैसे वह मुझे नीचे खींच रही हो।

सूरज भी मुझे इतना पास लगता है कि ऐसा लगता है जैसे मेरे बाल जल रहे हों। इसलिए मैं उस नरक में नहीं जाना चाहता, जो इस गर्मी से लाखों गुना अधिक गर्म है।

यीशु! मैं पूरे मन से आप पर विश्वास करके स्वर्ग जाऊँगा। मैं फिर से अपने परिवार के लोगों से आपके बारे में बात करूँगा।

मैं आपसे प्रेम करता हूँ, यीशु!

प्रेम सहित,

